मंगल भूमि फाउंडेशन

वार्षिक रिपोर्ट

2024

संरक्षक संदेश....

डॉ. अनिल प्रकाश जोशी
संरक्षक, मंगल भूमि फाउंडेशन

प्रिय साथियों,

मंगल भूमि फाउंडेशन की वार्षिक रिपोर्ट के इस विशेष अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। यह देखकर अत्यंत हर्ष होता है कि फाउंडेशन निरंतर समाज के सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक सशक्तिकरण की दिशा में दृढ़ता से कार्य कर रहा है।

आज जब हमारा समाज पर्यावरणीय चुनौतियों, सामाजिक असमानताओं और सांस्कृतिक क्षरण का सामना कर रहा है, ऐसे में मंगल भूमि जैसी संस्थाओं की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। इस वर्ष की उपलब्धियाँ यह दर्शाती हैं कि समर्पण, सहयोग और दृष्टिकोण के साथ हम कितनी दूर तक पहुँच सकते हैं।

मैं फाउंडेशन की पूरी टीम, स्वयंसेवकों और सभी सहयोगियों को उनके अथक प्रयासों के लिए बधाई देता हूँ। साथ ही, भविष्य की पहलों के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ। मेरा विश्वास है कि आने वाले वर्षों में भी मंगल भूमि फाउंडेशन मानवता और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करने की दिशा में प्रेरणास्रोत बना रहेगा।
आप सभी का प्रयास एक उज्जवल, समावेशी और हरित भविष्य की नींव रख रहा है।

सस्नेह,
डॉ. अनिल प्रकाश जोशी

प्रमुख सलाहकार संदेश...

श्री जी. अशोक कुमार (पूर्व IAS)
प्रमुख सलाहकार, मंगल भूमि फाउंडेशन

प्रिय मित्रों,

मंगल भूमि फाउंडेशन की वार्षिक रिपोर्ट के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस वर्ष की यात्रा केवल आँकड़ों और परियोजनाओं की नहीं रही, बल्कि यह सामाजिक चेतना, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और सामुदायिक भागीदारी की एक जीवंत कहानी रही है।

एक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में अपने अनुभव से मैंने जाना है कि स्थायी विकास तभी संभव है जब उसमें समाज की भागीदारी, जमीनी समझ और संवेदनशीलता हो। मंगल भूमि फाउंडेशन इन मूल्यों को आत्मसात करते हुए कार्य कर रहा है, जो अत्यंत सराहनीय है।

फाउंडेशन ने न केवल पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में प्रभावी पहल की, बल्कि युवाओं को जोड़कर एक नई ऊर्जा और सोच को भी जन्म दिया है। यह भविष्य के लिए एक सकारात्मक संकेत है।

मैं इस अवसर पर फाउंडेशन की समर्पित टीम, सहयोगियों, दाताओं और विशेष रूप से उन समुदायों का धन्यवाद करता हूँ जो इस परिवर्तन यात्रा का हिस्सा बने।

आइए, हम सभी मिलकर इस मिशन को और विस्तार दें, ताकि मंगल भूमि वास्तव में एक "मंगलमय" और समावेशी समाज की नींव बन सके।

सादर,
जी. अशोक कुमार (पूर्व IAS)
प्रमुख सलाहकार, मंगल भूमि फाउंडेशन

संस्थापक सन्देश ....

श्री रामबाबू तिवारी
अध्यक्ष, मंगल भूमि फाउंडेशन

प्रिय सहयोगियों, शुभचिंतकों एवं साथियों,

मंगल भूमि फाउंडेशन की वार्षिक रिपोर्ट आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत गर्व और संतोष की अनुभूति हो रही है। यह रिपोर्ट न केवल हमारे कार्यों का लेखा-जोखा है, बल्कि हमारे सपनों, संघर्षों और संकल्पों की एक झलक भी है।
पिछले एक वर्ष में हमने जो यात्रा तय की है, वह हमारे साझा प्रयासों और समाज के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। पर्यावरण संरक्षण, जल संचयन,ग्रामीण विकास, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और स्वास्थ्य के क्षेत्र में हमारी पहलों ने जमीनी स्तर पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। ये उपलब्धियाँ केवल आंकड़े नहीं, बल्कि उन मुस्कुराहटों की गवाही हैं जो हमारे प्रयासों से किसी के जीवन में आईं।

मंगल भूमि फाउंडेशन की नींव सेवा, संवेदना और सतत विकास की सोच पर आधारित है। हम मानते हैं कि समाज की असली ताकत सामूहिक चेतना और सहयोग में निहित है। मैं सभी सदस्यों, कार्यकर्ताओं, दाताओं और शुभचिंतकों का हृदय से धन्यवाद करता हूँ, जिनके योगदान और आशीर्वाद से यह यात्रा संभव हुई।
आइए, हम इसी भावना के साथ आगे भी कार्य करें, और मंगल भूमि को एक सशक्त, समर्पित और जागरूक समाज के निर्माण का माध्यम बनाएं।

आप सभी का,
रामबाबू तिवारी
अध्यक्ष, मंगल भूमि फाउंडेशन

निदेशक संदेश ....

अनीता सिंह
निदेशक, मंगल भूमि फाउंडेशन

प्रिय साथियों,

मंगल भूमि फाउंडेशन की वार्षिक रिपोर्ट के इस संस्करण के माध्यम से आप सभी से संवाद करना मेरे लिए गर्व और आनंद का विषय है। यह वर्ष हमारे लिए चुनौतियों से भरा रहा, लेकिन साथ ही इन चुनौतियों ने हमें और भी अधिक सशक्त, संगठित और प्रेरित किया।

हमारा उद्देश्य सदैव स्पष्ट रहा है — प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखते हुए समाज के वंचित वर्गों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना। इस वर्ष हमने विभिन्न क्षेत्रों में छोटे लेकिन प्रभावशाली कदम उठाए — चाहे वह प्रकृति की पर्यावरण संरक्षण (प्रकृति की पाठशाला) जल संचयन, तालाब पुनरुद्धार,नदी की पाठशाला,नदियों की अविरलता निर्मलता की पहलें हों, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सहयोग हो या महिला सशक्तिकरण की दिशा में किए गए प्रयास।

इन उपलब्धियों के पीछे आप सभी की मेहनत, सहयोग और निष्ठा है। मैं फाउंडेशन की पूरी टीम, हमारे संरक्षक, स्वयंसेवकों और समर्थकों की आभारी हूँ, जिन्होंने इस यात्रा को सार्थक बनाया।
आइए, हम आने वाले वर्षों में भी अपनी प्रतिबद्धता और संवेदनशीलता के साथ इस मिशन को आगे बढ़ाएँ।
मंगल भूमि के माध्यम से हम न सिर्फ धरती को, बल्कि इंसानी रिश्तों को भी और अधिक सुंदर बना सकते हैं।

सादर,
अनीता सिंह
निदेशक, मंगल भूमि फाउंडेशन

राष्ट्रीय समन्वयक संदेश....

डॉ. रेवा सिंह
राष्ट्रीय समन्वयक, मंगल भूमि फाउंडेशन

प्रिय साथियों,

मंगल भूमि फाउंडेशन की इस वार्षिक रिपोर्ट के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह वर्ष हमारे लिए अनेक आयामों में कार्य करने, सीखने और समाज के साथ गहरे स्तर पर जुड़ने का अवसर लेकर आया।

कार्यक्रम संयोजक के रूप में मेरी भूमिका केवल योजनाओं को धरातल पर उतारने तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना रहा कि हर पहल हमारे मूल उद्देश्य – सामाजिक सशक्तिकरण, पर्यावरणीय संतुलन और सतत विकास – से जुड़ी रहे। हमारी टीम ने सामूहिक चेतना और स्थानीय सहभागिता के साथ कई प्रभावशाली कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित किया, जिनका सकारात्मक प्रभाव जमीनी स्तर पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

इस यात्रा में हमने जिन समुदायों के साथ कार्य किया, उनसे भी हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। उनकी जरूरतें, समस्याएँ और समाधान की दिशा में उनका सक्रिय योगदान ही हमारी असली प्रेरणा रहा।
मैं इस अवसर पर उन सभी सहयोगियों, स्वयंसेवकों और शुभचिंतकों का आभार प्रकट करती हूँ, जिनके समर्थन और विश्वास ने हमारे कार्यों को मजबूती दी।
आइए, हम मिलकर इस प्रयास को और अधिक प्रभावशाली, समावेशी और संवेदनशील बनाएं।
मंगल भूमि के माध्यम से हम सिर्फ एक संगठन नहीं, एक परिवर्तन की धारा गढ़ रहे हैं।

सप्रेम,
डॉ. रेवा सिंह
कार्यक्रम संयोजक, मंगल भूमि फाउंडेशन

आभारिका...

मंगल भूमि फाउंडेशन की वार्षिक यात्रा के सफलतापूर्वक पूर्ण होने पर हम हृदय की गहराइयों से उन सभी व्यक्तित्वों, संस्थाओं एवं सहयोगियों के प्रति गौरवपूर्ण आभार प्रकट करते हैं, जिनके सतत सहयोग, समर्थन एवं मार्गदर्शन ने हमारे सामाजिक सरोकारों को सशक्त और प्रभावी बनाया है।

हम सबसे पहले उन जनमानस, स्वयंसेवकों, और साथी संगठनों को धन्यवाद ज्ञापित करते हैं जिन्होंने हमारे अभियानों—चाहे वह पर्यावरण संरक्षण, जल-संवर्धन, तालाब पुनरुद्धार, खेत में मेडबंदी, नदी स्वच्छता, शिक्षा, अथवा स्वास्थ्य जागरूकता से संबंधित रहे हों—में न केवल भाग लिया, बल्कि उन्हें जनांदोलन के रूप में स्थापित करने में अपना अमूल्य समय और श्रम समर्पित किया।

विशेष रूप से हम उन ग्रामवासियों, आश्रमों, स्थानीय नेतृत्व, छात्र-छात्राओं तथा समाज के हर उस वर्ग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं जिन्होंने मंदाकिनी नदी की निर्मलता और अविरलता व तालाबों के पुनरुद्धार के लिए हमारे प्रयासों को आत्मसात किया और इस अभियान को एक लोक-आध्यात्मिक आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया।

हम उन प्रशासनिक अधिकारियों, मीडिया प्रतिनिधियों, शिक्षाविदों, और नीति निर्माताओं का भी आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने समय-समय पर हमारी योजनाओं को न केवल मान्यता दी, बल्कि आवश्यक संसाधन, मंच और समर्थन भी प्रदान किया। रामबाबू तिवारी जी जैसे प्रेरणादायक नेतृत्व का विशेष धन्यवाद, जिन्होंने नदी चेतना, नदी पाठशाला व प्रकृति की पाठशाला जैसी अवधारणाओं को सामाजिक शिक्षा का हिस्सा बनाकर नई पीढ़ी को प्रकृति से जोड़ने का अद्भुत कार्य किया।

साथ ही, हम फाउंडेशन की संपूर्ण कार्यकारिणी, सलाहकार मंडल, और कोर टीम के प्रति हार्दिक प्रशंसा प्रकट करते हैं, जिनके सतत परिश्रम, समर्पण और संगठनात्मक कौशल ने इस वर्ष को उपलब्धियों से परिपूर्ण बनाया। हमारी यह यात्रा सिर्फ रिपोर्ट के पन्नों तक सीमित नहीं, बल्कि यह समाज की साझी आकांक्षाओं का जीवंत दस्तावेज है।

हमें विश्वास है कि आने वाला वर्ष भी आपके स्नेह, सहयोग और संकल्प शक्ति से संवरता रहेगा। आप सभी के प्रति मंगल भूमि फाउंडेशन की ओर से कोटि-कोटि आभार। जय प्रकृति। जय सेवा। जय समाज।

- मंगल भूमि फाउंडेशन परिवार

अनुक्रमणिका

- परिचय
- उद्देश्य एवं लक्ष्य
- मंदाकिनी नदी स्वच्छता अभियान
- मंदाकिनी गंगा कि पाठशाला
- भारत रत्न, राष्ट्र ऋषि श्रद्धेय नानाजी देशमुख जी जयंती सामारोह
- पानी चौपाल
- महिला सशक्तिकरण
- अर्थ गंगा
- गंगा प्रहरियों का सम्मान
- प्रकृति नमन दिवस
- संगम के नाविक गंगा के रक्षक
- राष्ट्रीय नदी सम्मेलन
- प्रशिक्षण कार्यक्रम -
  - हर्बल गुलाल एवं कलर बनाना
  - हर्बल धूपबत्ती और अगरबत्ती बनाना
  - हर्बल साबुन बनाना
- बुंदेली होली व फाग उत्सव
- हमारे सहयोगी संस्थान

हमारा परिचय.....

मंगल भूमि फाउंडेशन, उत्तर प्रदेश में प्रयागराज जनपद के शंकरगढ़ क्षेत्र एवं उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में विगत 14 वर्षों से जल संरक्षण एवं संवर्धन हेतु
प्रयासरत है।

जल के प्राकृतिक स्त्रोत तालाब, छोटी नदियों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु 2011 से लगातार विभिन्न अभियानों के माध्यम से कार्य करते आए है जैसे गांव- गांव पानी चौपाल, पानी पंचायत, नदी संसद का आयोजन करना। जल साक्षरता अभियान इत्यादि चलाकर सामूहिक श्रमदान के माध्यम से तालाब का जीर्णोद्धार करते आए है, इस संस्थान ने आज तक करीब 75 तालाबों का जीर्णोद्धार सामूहिक श्रमदान के माध्यम से संपूर्ण बुंदेलखंड में कराया है।

75

★ ★ ★ ★ ★

तालाबों का जीर्णोद्धार सामूहिक श्रमदान के माध्यम से संपूर्ण बुंदेलखंड में कराया गया है।

5,000

★ ★ ★ ★ ★

आपके कुशल नेतृत्व में मेड़बंदी का कार्य 10 गांव में 5000 से अधिक बीघे में बारिश की एक-एक बूंद को रोकने के लिए खेत पर मेड़बंदी करवाई गई।

11

★ ★ ★ ★ ★

आप मंगल ग्राम की अवधारणा से 11 गांव में प्रकृति केंद्रित विकास की अवधारणा से कार्य कराया जा रहा है , जिसका मानक खुशहाली है।

5,550

★ ★ ★ ★ ★

आपके निर्देशन में पेड़ जियाओ अभियान के तहत 5,000 से अधिक की संख्या में पौधे लगाकर तैयार किए जा चुके हैं।

हमारा प्रमुख उद्देश्य एवं कार्य :

1. **जल संरक्षण और संवर्धन:**
फाउंडेशन "खेत का पानी खेत में, गांव का पानी गांव में" मिशन के तहत तालाबों का जीर्णोद्धार, खेतों में मेड़बंदी और वर्षा जल संचयन के लिए कार्य करता है। यह अभियान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम में भी सराहा गया है।

2. **जल साक्षरता अभियान:**
गांव-गांव जाकर "पानी चौपाल", "पानी पंचायत" और "नदी संसद" जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया जाता है।

3. **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण:**
तालाबों, छोटी नदियों और अन्य जल स्रोतों के संरक्षण के लिए सामूहिक श्रमदान और पौधारोपण जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

वार्षिक रिपोर्ट

मंदाकिनी नदी स्वच्छता अभियान (09 अप्रैल 2023) :-

चित्रकूट की पुनीत नदी मां मंदाकिनी की अविरलता निर्मलता हेतु घाट पे स्वच्छता अभियान चलाया गया। कर्वी मुख्यालय के सुंदर घाट में नदी प्रहरियों द्वारा श्रम दान के माध्यम से स्वच्छता अभियान चलाया गया।

मंदाकिनी गंगा की पाठशाला (6-7 मई 2023):

चित्रकूट श्री राम की कर्म स्थली रही है, जहां भगवान श्रीराम ने साढ़े 11 वर्ष का वनवास काटा। चित्रकूट विंध्याचल पर्वत श्रेणी पर स्थित है, इसी पर्वत श्रृंखला में स्थित महर्षि अत्रि एवं माता सती अनुसुइया के आश्रम से मंदाकिनी का उद्गम स्थल है। इस उद्गम स्थल के ऊपर पहाड़ी क्षेत्र है। ऐसा कहा जाता है कि सती अनुसुइया ने अपने तपोबल से मंदाकिनी को उत्पन्न किया था, जिसका उल्लेख तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में किया है कि "नदी पुनीत पुरान बखानी अत्री प्रिया निज तप बल आनी"। यह नदी बुंदेलखंड क्षेत्र की जीवन रेखा है और इस क्षेत्र की सबसे पवित्र नदी मानी जाती है। बुंदेलखंड क्षेत्र के श्रद्धालु यहां प्रत्येक अमावस्या में पुण्य की डुबकी लगाने आते हैं और भगवान कामतानाथ, कामदगिरि पर्वत की परिक्रमा लगाते हैं।

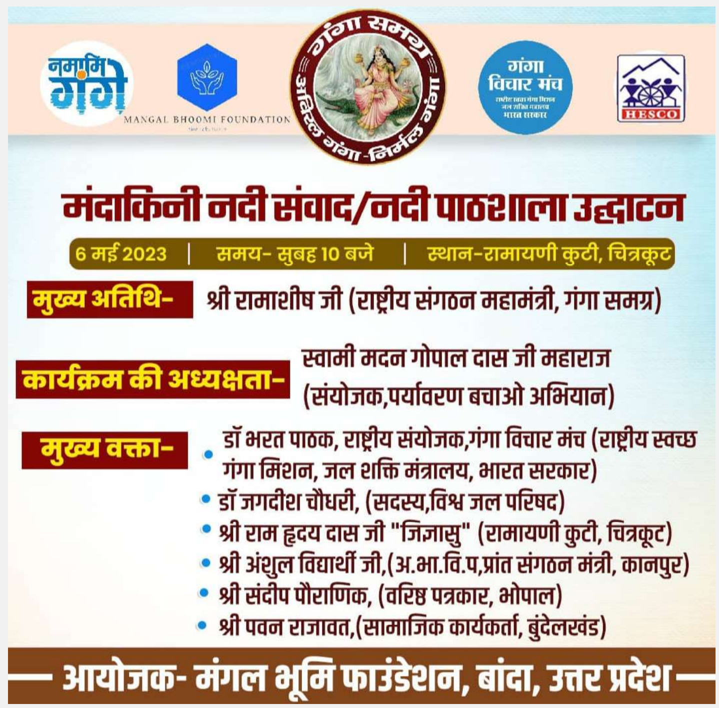

रामचरितमानस 232/2 के अनुसार यहां भगवान राम से मिलने जब भरत आए तो उन्होंने भी इस नदी को पुनीत माना। "**यहां भरत सब सहित सुहाए, मंदाकिनी पुनीत नहाए, सरित समीप राखि सब लोगा, मागि मातु गुरु सचिव नियोगा**"। ऐसी मान्यता है कि कवि तुलसीदास जी ने रामचरितमानस लिखने में इस नदी के जल का उपयोग स्याही के तौर पर किया होगा ऐसा यहां के लोगों का मानना है। मंदाकिनी नदी संपूर्ण पापों को शीघ्र दूर करती है। महासती अनुसुइया के द्वारा अवतरित पुण्य सलिला मंदाकिनी का प्रभाव तो भागीरथी गंगा से भी अधिक है क्योंकि गंगा तो पापों को धो देती है किंतु मंदाकिनी तो पाप समूह का भक्षण करके उसका अस्तित्व ही मिटा देती है।

सुरसरि धार नाऊ मंदाकिनी, जो सब पातक पोतक डाकिनी। मंदाकिनी नदी लगभग 75 किलोमीटर की यात्रा तय कर लाखों किसानों को सिंचाई के लिए जल प्रदान करती है। यह करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का प्रतीक है और धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटकों को आकर्षित करती है। मां मंदाकिनी नदी के किनारे बड़े-बड़े पर्यटन केंद्र स्थित हैं, जैसे रामघाट, जानकीकुंड, स्फटिक शिला, सती अनुसुइया आश्रम, पंच प्रयाग (जो छोटी-छोटी जल धाराओं का संगम है), चक्की घाट, ताठी घाट आदि।

मां मंदाकिनी नदी के किनारे रामघाट में प्रतिदिन शाम की गंगा आरती धार्मिक पर्यटन का आकर्षण है, साथ ही मंदाकिनी नदी के किनारे रामघाट में नावें लोगों को आकर्षित करती हैं और यह रामघाट पर्यटन का प्रमुख केंद्र है। बड़े-बड़े धार्मिक स्थल और आश्रम नदी के किनारे ही स्थित हैं, लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि जिस नदी के प्रवाह से यहां धार्मिक आस्था का केंद्र है, पर्यटन का केंद्र है, वहीं आज मंदाकिनी अपने अस्तित्व से जूझ रही है। अब समय आ गया है कि हम सभी नदी के किनारे के समाज के लोग नदी की अविरलता और निर्मलता के लिए साझा रूप से प्रयास करें। इस नदी की अविरलता और निर्मलता हेतु विगत वर्ष मां मंदाकिनी गंगा दर्शन यात्रा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शोध छात्र रामबाबू तिवारी की अगुवाई में निकाली गई, जिसमें स्थानीय संत समाज, पर्यावरणविद, केवट, किसान बढ़-चढ़कर सहयोग कर रहे थे।

नदी की अविरलता निर्मलता हेतु प्रमुख सुझाव इस प्रकार से हैं-

- नदी की धारा को चिन्हित कर सीमांकन कराकर जीर्णोद्धार कराया जाए।
- नदी के किनारे के अतिक्रमण हटवाए जाएं।
- नदी के किनारे गौ आधारित प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जाए
- बंधोइन बांध में फाटक लगाए जाएं, जिससे नदी का न्यूनतम जल प्रवाह बना रहे।
- सीवर ट्रीटमेंट प्लांट नदी से दूर स्थापित करें, शोधित पानी का खेती व निर्माण में प्रयोग में किया जाए।
- मंदाकिनी नदी के उद्गम स्थल अनुसुइया आश्रम व शबरी जल प्रपात के बीच सूखी नदी क्षेत्र में बांध बनाकर बारिश का पानी इकट्ठा करें। इससे गर्मी में भी नदी जल बना रहेगा।
- चित्रकूट नगर पालिका परिषद की ओर से विकास की ऐसी महायोजना बने, जिसमें भू प्रयोग में 33 फीसद जंगल हो।
- जल स्रोतों का संरक्षण व नालियों के गंदे पानी अपशिष्ट के निस्तारण की व्यवस्था हो।
- मंदाकिनी नदी को प्लास्टिक मुक्त क्षेत्र बनाया जाए।
- नदी सीमा के अंदर अधिक से अधिक पौधारोपण कराया जाए।

मां मंदाकिनी की अविरलता निर्मलता को लेकर किए जा रहे प्रयास। नदी के किनारे के घाट में सप्ताहिक श्रम साधना किया जा रहा है। रामबाबू तिवारी की अगुवाई में कई घाटों में घाट प्रमुख बनाकर सप्ताहिक श्रमदान किया जा रहा है, सुंदर घाट, घाट प्रमुख सुनील निषाद आरोग्य धाम, मुकुंद त्रिपाठी) स्फटिक शिला (प्रो घनश्याम गुप्ता)। पंच प्रयाग घाट राजू दास, सती अनुसुइया घाट लल्ली महाराज, प्रत्येक पखवाड़े में रामघाट मां मंदाकिनी आरती स्थल में मंदाकिनी नदी की निर्मलता हेतु शपथ भी दिलाई जाती है। घाट प्रमुख अश्वनी अवस्थी ग्राम पंचायत हिनौता, सगवारा में प्राकृतिक खेती की शुरुआत भी की गई है जिससे नदी के किनारे पेस्टिसाइड ऑफ फर्टिलाइजर का प्रयोग कम हो सके।

नदी संवाद गांव-गांव किया जा रहा है। नदी से जन को जोडने। मां मंदाकिनी नदी की अविरलता निर्मलता हेतु नदी साक्षरता अभियान नुक्कड़ नाटक, दिवारी नृत्य, पीआरए, नदी रिसोर्स मैपिंग के माध्यम से किया जा रहा है। मंदाकिनी गंगा की पाठशाला के संयोजक रामबाबू तिवारी बताते हैं कि राष्ट्रीय कार्यशाला (मंदाकिनी गंगा की पाठशाला) का शुभारंभ किया है। प्रत्येक 3 माह में दो दिवसीय मंदाकिनी गंगा की पाठशाला के माध्यम से 50 विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जायेगा। इस बार भी देश के आए पर्यावरण प्रेमी विद्यार्थियों को मंदाकिनी गंगा की पाठशाला के माध्यम से मंदाकिनी नदी प्रहरी बनाया गया है। यह प्रशिक्षण लेने के बाद विद्यार्थी मंदाकिनी नदी प्रहरी कहलाए जाएंगे। मंदाकिनी गंगा अविरलता निर्मलता हेतु यह मंदाकिनी प्रहरी का कार्य करेंगे इसके साथ ही साथ अपने क्षेत्र के तालाब पोखर झील झरना छोटी नदियों के संरक्षण संवर्धन हेतु कार्य करेंगे। इस मंदाकिनी गंगा की पाठशाला के माध्यम से देशभर में नदियों पर कार्य करने वालों का एक कैडर खड़ा किया जा रहा है।

इस पर नदियों के विषय विशेषज्ञों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं वैज्ञानिकों प्रोफेसरों ब्यूरोक्रेट्स आदि के माध्यम से इन विद्यार्थियों को जागरूक किया जा रहा है। मंदाकिनी प्रहरी को प्रशिक्षण देने के बाद मंदाकिनी के किनारे के समाज को मां मंदाकिनी की अविरलता निर्मलता के लिए जोड़ना होगा इसके लिए प्रमुख घाटों पर एक कैडर बनाकर 7 लोगों की टीम बनाकर रोको टोको अभियान चलाया जाएगा जिससे नदी प्रदूषित ना हो यह टीम के सदस्य वॉलंटरी एक दिन सिटी लेकर घाट पर खड़े होकर घाट पर गंदगी फैलाने वाले लोगों को सीटी बजा कर रोकेंगे इसीलिए यह अभियान रोको टोको अभियान कहा जाएगा। इसकी शुरुआत मां मंदाकिनी गंगा के उद्गम क्षेत्र सती अनसूया घाट में शुरुआत 25 मई से की जा रही है।

अधिक जानकारी के लिए लिंक पर क्लिक करे।
https://www.abplive.com

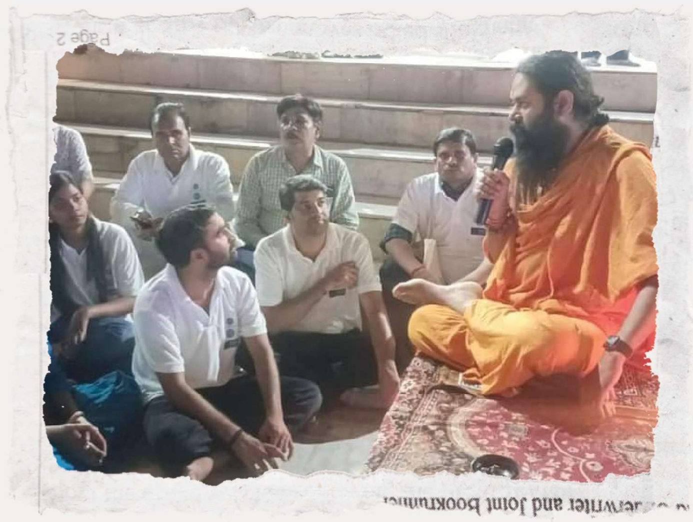

पाठशाला में संरक्षक मंडल के रूप में श्री बृजेंद्र पाल सिंह जी लोक भारती श्री राम आशीष जी गंगा समग्र स्वामी मदन गोपाल दास जी महाराज संयोजक पर्यावरण बचाओ अभियान श्री राम हृदय दास जी महाराज रामायण कुटी चित्रकूट डॉ भरत पाठक जी गंगा विचार मंच विषय विशेषज्ञ डॉ अनिल गौतम पीएसआई देहरादून श्री संदीप पौराणिक वरिष्ठ पत्रकार भोपाल डॉ जगदीश चौधरी डॉ सुभाष कुमार गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान प्रयागराज डॉक्टर पारुल नाबार्ड लखनऊ प्रो विपिन व्यास बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल श्री सुरेश रैकवार तरुण भारत संघ अलवर राजस्थान श्री गुंजन मिश्रा चित्रकूट श्री अभिमन्यु भाई चित्रकूट कुमारी अनिता शोध छात्रा इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज शामिल हुए। कार्यक्रम में अतिथि की भूमिका में श्री सुरेश जी श्री अंशुल विद्यार्थी जी शिप्रा पाठक जी, डॉ अनिल सम्मलित हुए। कार्यक्रम का आयोजन मंगल भूमि फाउंडेशन ने किया। प्रमुख आयोजक हरिशंकर सामाजिक कार्यकर्ता अमरकंटक कुमारी अनिता शोध छात्रा रामबाबू तिवारी पर्यावरण प्रहरी बुंदेलखंड आदि थे।

मंदाकिनी गंगा कि पाठशाला की कुछ झलकियां :

भारत रत्न, राष्ट्र ऋषि श्रद्धेय नानाजी देशमुख जी जयंती सामारोह (11 अक्टूबर 2023

भारत रत्न नानाजी देशमुख जयंती समारोह का आयोजन 11 अक्टूबर 2023 को यमुना तट किनारे वोट क्लब, प्रयागराज में किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. नंदिता पाठक रहीं, जो नानाजी की दत्तक पुत्री के रूप में देश भर में जानी जाती हैं। उन्होंने नानाजी के साथ 29 वर्षों तक दीनदयाल शोध संस्थान में ग्रामीण विकास के क्षेत्र में कार्य किया।

डॉ. पाठक ने नानाजी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी, जिसके बाद मंगल भूमि फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं ने भी पुष्प अर्पित कर नानाजी को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने नानाजी के विचारों को साझा करते हुए कहा कि मंगल भूमि फाउंडेशन को जल संचयन, ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण जैसे विषयों पर कार्य करना चाहिए, जिससे नानाजी के आदर्शों को आगे बढ़ाया जा सके।

मुख्य अतिथि श्रीमती अनामिका चौधरी, पूर्व महापौर प्रयागराज और भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश मंत्री, ने युवाओं से ग्रामीण विकास और गंगा संरक्षण में आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यदि युवा सकारात्मक कार्यों में जुटेंगे, तो निश्चित रूप से गांवों का विकास होगा और गंगा किनारे बसे समाज में समृद्धि आएगी।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सचिन सिंह, सत्यम सिंह, अपर्णा, एकता पाठक, मयंक और सुमन लता सहित कई गणमान्य उपस्थित रहे |

पानी चौपाल: जल साक्षरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल

05 जनवरी 2024 को ग्राम पंचायत भोगवारा, प्रतापपुर, प्रयागराज में पानी चौपाल का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य जल साक्षरता अभियान को बढ़ावा देना और ग्रामीण समुदाय को जल संचयन के महत्व के प्रति जागरूक करना था।

पानी चौपाल में ग्रामीण जनमानस के साथ-साथ जल संचयन से जुड़े बौद्धिक, सामाजिक कार्यकर्ता, पत्रकार, संत समाज के प्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी और अकादमिक विशेषज्ञों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान, गांव के एक तालाब का चयन किया गया और जल मित्रों का गठन किया गया, जो जल संचयन और संरक्षण के प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

इस पहल का उद्देश्य न केवल जल संसाधनों का संरक्षण करना है, बल्कि ग्रामीण समुदाय को जल संचयन के महत्व के प्रति जागरूक करना और उन्हें इस दिशा में सक्रिय रूप से काम करने के लिए प्रेरित करना है। पानी चौपाल जैसी पहलों से निश्चित रूप से जल संचयन और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन आएगा।

अख़बार की सुर्ख़ियों में....

Rambabu Tiwari to attend R-Day celebrations

Staff Reporter

Banda: Water hero Rambabu Tiwari, resident of Andhav village of the district, has been invited by the Additional Director General of Prasar Bharati to participate in the 75th Republic Day celebrations on 26 January 2024, as an eyewitness guest of the ceremony and parade on the path of duty in New Delhi. Some people who have been mentioned by the Honorable Prime Minister in his 'Shaman Ki Baat' radio program have been invited as guests. In the Bundelkhand region, the campaign 'Khet Ka Pani Khet Mein' has worked with farmers at the community level to save every drop of rain through village water village men. He has done the work of building embankments in the fields to stop the water from flowing in the fields. He has renovated more than 74 ponds through collective labor donation by going to every village and setting up Paani Chaupal, Paani Panchayat.

पहल | प्रतापपुर के भोगवारा में लगाई गई पानी चौपाल, मानव शृंखला से संचयन के प्रति किया गया जागरूक

जल को जन से जोड़ने की मुहिम में जुटे ग्रामीण

प्रतापपुर ब्लॉक के भोगवारा गांव में पंचायत भवन पर लगाई गई पानी चौपाल में रविवार को मौजूद ग्रामीणों को जागरूक करते प्रशिक्षक। • हिन्दुस्तान

प्रतापपुर, हिन्दुस्तान संवाद। विकास खंड प्रतापपुर के ग्राम पंचायत भोगवारा स्थित पंचायत भवन पर जल से जन को जोड़ने के लिए पानी चौपाल लगाई गई। इसके मुख्य अतिथि रहे प्रोफेसर दिगंबर, अकादमिक निदेशक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने जल संचयन के लिए रिचार्ज ट्रेंच बनाकर बरसात के पानी को रोकने की नसीहत दी।

प्रो. दिगंबर ने कहा कि अपने गांव का भूजल स्तर बढ़ाने हेतु बरसात की एक-एक बूंद के संचय को खेत पर मेडबंदी भी करनी होगी। मुख्य वक्ता गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान के शोध छात्र, जल प्रहरी रामबाबू तिवारी ने बताया कि पानी चौपाल जैसे आयोजन से गांव के लोगो में जल संचयन के प्रति ललक के साथ जल साक्षरता बढ़ेगी। पानी के प्रति जागरूक होकर ही अपने गांव को पानीदार बना सकते हैं। वर्तमान समय में गांव से तालाबों की परंपरा (संस्कृति) खत्म हो रही है। जब जल साक्षरता बढ़ेगी तो निश्चित रूप से पानी के प्रति संवेदना बढ़ेगी।

मंगल भूमि फाउंडेशन की संयोजिका अनिता ने कहा कि जल संचयन के प्रति महिलाओं को आगे आना होगा क्योंकि दैनिक क्रिया-कलापों में महिलाएं पानी का प्रयोग अधिक करती हैं। डॉ. अनूप कुमार त्रिपाठी ने कहा कि ऐसे आयोजन से युवाओं को अवश्य प्रेरणा लेनी चाहिए। हम सबने यह ठाना है, तालाब को बचाना है की थीम के साथ मानव श्रृंखला भी बनाई गई।

कार्यक्रम में मुख्यतया ग्राम सचिव अखिलेन्द्र प्रताप, प्रधान प्रतिनिधि राजाराम यादव, सुमित राय, साक्षी सिंह, करण सिंह, अनुभव सिंह, हर्ष, प्रमोद कुमार, सुनील, राजेंद्र, कमलेश, सुनील, देवराज यादव व कमलावती आदि रहे।

णतंत्र दिवस के प्रत्यक्षदर्शी बनेंगे वाटर हीरो रामबाबू तिवारी

▸▸ नई दिल्ली में होने वाले समारोह के लिए प्रसार भारती अपर महानिदेशक की ओर से मिला आमंत्रण

वाटर हीरो रामबाबू तिवारी।

कार्यालय संवाददाता, बांदा, अमृत विचार : 26 जनवरी को 75वें गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर होने वाले समारोह परेड में अधांव गांव निवासी रामबाबू तिवारी अथिति के रूप में शामिल होकर कार्यक्रम के प्रत्यक्षदर्शी बनेंगे। वाटर हीरो के नाम से अपनी छवि बनाने वाले रामबाबू तिवारी को गणतंत्र दिवस समारोह पर होने वाले समारोह में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रण प्रसार भारती के अपर महानिदेशक ने दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने "मन की बात" रेडियो कार्यक्रम में कुछ विशेष कर गुजरने वाले जिन लोगों का जिक्र किया है उन्हें इस बार 75वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में होने वाले समारोह में अथिति के रूप में विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अभियान 'खेत का पानी खेत में, गांव का पानी गांव में' स्लोगन के माध्यम से किसानों ने बारिश की एक-एक बूंद को सहेजने का कार्य सामुदायिक स्तर पर किया। इसके अंतर्गत खेत का पानी खेत में रोकने के लिए खेतों में मेडबंदी बनवाने का कार्य किया। उन्होंने गांव-गांव जाकर पानी चौपाल और पानी पंचायत लगाकर सामूहिक श्रमदान के माध्यम से 74 से अधिक तालाबों का जीर्णोद्धार कराया। इस अभियान की सराहना विगत 27 जून 2021 को भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने मन की बात के रेडियो कार्यक्रम में कर चुके हैं। इनके शोध का विषय भी बुंदेलखंड के तालाबों का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन है। अधांव गांव निवासी रामबाबू तिवारी को मिले इस आमंत्रण से गांव के किसानों में एक अलग ही उत्साह है।

<u>महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल :-</u>

1 फरवरी 2024 को ग्राम-पीरदल्लू, ब्लाक-श्रृंगवेरपुर, प्रयागराज में आयोजित महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम में ग्रामीण महिलाओं से संवाद किया गया। इस अवसर पर हेस्को संस्थान की डॉ. किरण नेगी ने गंगा के किनारे की ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिए जागरूक किया। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं को अपने स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके आमदनी बढ़ाने के विभिन्न तरीकों के बारे में जानकारी दी, जैसे कि आचार बनाना, पापड़, दलिया आदि बनाना और बेचना।

डॉ. नेगी ने महिलाओं को स्थानीय स्टार्टअप शुरू करने के लिए आवश्यक कौशल विकास कार्यक्रमों के बारे में भी बताया। उन्होंने हेस्को ग्राम, देहरादून में प्रशिक्षण लेने के लिए आमंत्रित किया, जहां वे विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों में भाग ले सकती हैं और अपने उद्यमशीलता कौशल को बढ़ा सकती हैं।

हेस्को संस्थान द्वारा प्रदान किए गए प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से, ग्रामीण महिलाएं न केवल अपने आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकती हैं, बल्कि अपने समुदाय में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकती हैं। यह पहल महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है।

अर्थ गंगा: गंगा के किनारे के समाज के लिए एक नई दिशा

1 फरवरी 2024 को श्रृंगवेरपुर धाम, प्रयागराज में एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें गंगा के किनारे बसे समाज, निषाद समुदाय (नाविक) और तीर्थ पुरोहितों से संवाद किया गया। इस अवसर पर हेस्को संस्थान की डॉ. किरण नेगी ने उपस्थित जनों को अर्थ गंगा कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताया, जिसका उद्देश्य गंगा के किनारे के समाज को आर्थिक रूप से संपन्न बनाना है।

डॉ. नेगी ने बताया कि अर्थ गंगा कार्यक्रम के तहत गंगा के किनारे के समुदायों को अपने पारंपरिक कौशल और संसाधनों का उपयोग करके आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम के माध्यम से न केवल गंगा की सफाई और संरक्षण में सुधार किया जा सकता है, बल्कि गंगा के किनारे के समाज के लिए भी नए अवसर पैदा किए जा सकते हैं।

गंगा आरती बटुकों/ गंगा प्रहरियों का सामना (1 फरवरी 2024)

1 फरवरी 2024 को तीर्थ नगरी प्रयागराज में माघ मेला के दौरान जिला प्रशासन और त्रिवेणी आरती समिति द्वारा बटुक बालकों के माध्यम से प्रतिदिन मां गंगा की संध्या आरती की जाती है। इस आरती स्थल से मां गंगा की अविरलता और निर्मलता का संदेश मंगल भूमि फाउंडेशन के स्वयंसेवक देते हैं।

माघ मेला समाप्ति पर मंगल भूमि फाउंडेशन ने उन बटुक बालकों और गंगा प्रहरियों का सम्मान समारोह आयोजित किया, जो प्रतिदिन संगम क्षेत्र में मां गंगा की अविरलता और निर्मलता के लिए सेवा देते हैं।

इस सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मेजर हर्ष कुमार, संयुक्त सचिव, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज; हेस्को संस्थान की डॉ. किरण नेगी; मंगल भवन फाउंडेशन प्रयागराज इकाई के संयोजक सनत मिश्र; और त्रिवेणी आरती समिति के संयोजक श्री प्रदीप पांडे उपस्थित रहे।

महिला सशक्तिकरण (2 फरवरी 2024)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के फैशन डिज़ाइनिंग केंद्र में अध्ययनरत छात्राओं का मनोबल और कौशल बढ़ाने के उद्देश्य से एक संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस संवाद में केंद्र की समन्वयक डॉ. मोनिषा सिंह ने कहा कि आजकल फैशन हर जगह दिखाई देता है। बढ़ती आय के स्तर, 'अच्छा दिखो, अच्छा महसूस करो' के बढ़ते रवैये और खुदरा क्षेत्र में विकास के साथ फैशन उद्योग में वास्तव में एक अच्छी संभावनाएं हैं। फैशन व्यवसाय में शामिल होना लगभग एक फैशन बन गया है। फैशन सरल और फिर भी बहुत सुंदर हो सकता है।

उन्होंने कहा कि भारत में बिना सिले कपड़ों ने पुरुषों और महिलाओं के लिए फैशन बनाया, जिसे फैशन की दुनिया में सबसे नवीन आविष्कार कहा जाता है। भारतीयों ने शरीर के चारों ओर कपड़े लपेटने की कला में महारत हासिल की और दुनिया को सिखाया कि कैसे साड़ी, धोती या शॉल जैसे कुछ गज के कपड़े से एक शानदार फैशन स्टेटमेंट बनाया जा सकता है।

डॉ. मोनिषा ने कहा कि अगर इन छात्राओं द्वारा बनाए गए उत्पादों को बाजार मिले, तो और भी बेहतर होगा। डॉ. किरण नेगी ने कहा कि विश्वविद्यालय की छात्राओं द्वारा बेकार पड़े कपड़ों में डिज़ाइनिंग कर पुनः फैशनेबल उत्पाद बनाना एक अच्छा प्रयास है। इससे छात्राओं को रोजगार के अच्छे अवसर मिल सकते हैं।

मंगल भूमि फाउंडेशन के रामबाबू तिवारी ने कहा कि उनके संस्थान द्वारा इन छात्राओं का मनोबल बढ़ाने के लिए समय-समय पर कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाएंगे। इससे छात्राओं को अपने कौशल में सुधार करने और अपने उत्पादों को बाजार में उतारने में मदद मिलेगी।

<u>प्रकृति नमन दिवस, बसंत पंचमी (14 फरवरी, 2024) में मंगल भूमि फाउंडेशन ने ग्राम अंधाव, जनपद बांदा, बुन्देलखण्ड में आयोजित किया।</u>

देश में पहली बार डॉ. अनिल प्रकाश जोशी जी की अगुवाई में प्रकृति नमन दिवस "बसंत पंचमी" के अवसर पर मनाया जा रहा है। भोला उपवन में वृक्षों की पूजा कर प्रकृति का आभार प्रकट किया गया।

ग्राम पंचायत अध्यक्ष सविता देवी ने कहा कि अगले वर्ष बसंत पंचमी के दिन वे लोग ग्राम पंचायत भवन में प्रकृति नमन दिवस मनाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रकृति नमन दिवस पर गांव में स्वच्छता का संदेश दिया जा सकता है और गांव को स्वच्छ बनाकर प्रकृति का आभार प्रकट किया जा सकता है।

सामाजिक कार्यकर्ता देव गुलाम यादव ने कहा कि प्रकृति नमन दिवस इस वर्ष पहली बार मनाया जा रहा है, जो बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि आजकल हम धरती मां को खोद-खोदकर अन्न का उत्पादन कर रहे हैं। पहले लोग बैलों के माध्यम से लकड़ी के हलों से खेत जोतते थे, जिससे धरती मां का वक्ष कम चिरता था। लेकिन आज बड़े-बड़े मशीन, लोहे के हल, प्लाऊ, ट्रैक्टर आदि के माध्यम से जो जमीन उपजाऊ नहीं थी (बंजर, गोचर, जंगल), वहां भी लालची प्रवृत्ति के लोगों ने अन्न का उत्पादन करना शुरू कर दिया है। इससे गांव की गोचर और जंगल खत्म हो रहे हैं।

उन्होंने कहा कि प्रकृति नमन दिवस के माध्यम से पुरानी परंपरा को पुनः स्थापित करना होगा, जैसे कि बाग-बगीचा, गोचर, तालाब और पोखर। मंगल भूमि फाउंडेशन के सदस्य देवनाथ गर्ग ने कहा कि लोग अपने घर में किचेन गार्डन बनाकर प्रकृति नमन दिवस मना सकते हैं। उन्होंने बताया कि उनके घर में किचेन गार्डन है, जिससे उन्हें बाजार से कम सामान लाना पड़ता है और वे अपने घर की प्राकृतिक सब्जी और फल का उपयोग करते हैं।

कार्यक्रम में प्रकृति संचयन हेतु शपथ भी लिया गया। इस अवसर पर शिवावतार दीक्षित, राजाभैया, कालिका सविता, इंदल यादव, आनंद तिवारी, अवधेश विश्वकर्मा, रमाशंकर दीक्षित, जगमोहन यादव, गोरेलाल गर्ग, इकबाल खां, बलराम आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

Nature Network
प्रकृति नमन दिवस
वसंत पंचमी (14 फरवरी '2024)
राष्ट्रव्यापी "प्रकृति नमन" कार्यक्रम का हिस्सा बनें। अपने कार्यक्षेत्र में वसंत पंचमी (14 फ़रवरी) को प्रकृति के उपकार का नमन करें
पद्मश्री व पद्मभूषण डॉ. अनिल प्रकाश जोशी
मंगल भूमि फाउंडेशन,प्रयागराज इकाई

मंगल भूमि फाउंडेशन
प्रकृति नमन दिवस

प्रकृति नमन दिवस

इको इंडिया ऑर्गेनाइजेशन, प्रयागराज व मंगल भूमि फाउंडेशन, प्रयागराज इकाई के संयुक्त तत्वधान में बसंत पंचमी (14 फरवरी 2024) को मनाया गया प्रकृति नमन दिवस।

प्रयागराज के चुंगी चौराहा स्थित तिरंगा पार्क में प्रकृति नमन दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण करके मनाया गया। इको इंडिया ऑर्गेनाइजेशन के सिद्धार्थ ने कहा कि प्रकृति नमन दिवस प्रकृति को आभार प्रकट करने के उद्देश्य से मनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रकृति का आभार हम पृथ्वी पर वृक्ष लगाकर कर सकते हैं।

आज देश में पहली बार मनाए जा रहे प्रकृति नमन दिवस पर युवा साथियों ने एक-एक वृक्ष लगाकर कुल 11 वृक्ष लगाकर प्रकृति नमन दिवस मनाया। मंगल भूमि फाउंडेशन के अध्यक्ष रामबाबू तिवारी ने कहा कि भारत युवाओं का देश है और हम युवा साथी प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण को लेकर नेचर नेटवर्क के माध्यम से प्रयागराज क्षेत्र में कार्य करेंगे। उन्होंने बताया कि प्रयागराज के तिरंगा पार्क को मॉडल पार्क के रूप में विकसित किया जाएगा और अगले वर्ष प्रकृति नमन दिवस (बसंत पंचमी) से पहले यह पार्क मॉडल पार्क के रूप में तैयार हो जाएगा।

मंगल भूमि फाउंडेशन के सदस्य सौरव द्विवेदी ने कहा कि प्रकृति का आभार प्रकट करने के लिए युवाओं को प्रत्येक वर्ष बढ़-चढ़कर प्रकृति नमन दिवस मनाना होगा। उन्होंने कहा कि प्रकृति नमन दिवस केवल एक जगह इकट्ठे होकर मनाना नहीं है, बल्कि इसके लिए हमें प्रकृति से जुड़े हुए कार्यों जैसे वृक्षारोपण, स्वच्छता और जल संचयन जैसे कार्य करने होंगे।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से अभिषेक सिंह, विपिन राय, मयंक, अनिल, शशांक, प्रियतम आदि लोग उपस्थित रहे।

प्रयागराज व मंगल भूमि फाउंडेशन, प्रयागराज इकाई ने मनाया प्रकृति नमन दिवस।

देश में पहली बार प्रकृति को आभार प्रकट करने के उद्देश्य से बसंत पंचमी के दिन प्रकृति नमन दिवस मनाया गया। डॉ. अनिल प्रकाश जोशी जी, एक प्रख्यात पर्यावरणविद् के नेतृत्व में देश के 700 अलग-अलग स्थानों पर प्रकृति नमन दिवस मनाया गया।

तीर्थराज प्रयाग नगरी में, जहां गंगा, यमुना और विलुप्त सरस्वती का संगम है, इस अवसर पर यमुना के तट पर सेवा बस्ती के बच्चों के साथ प्रकृति नमन दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर विशाल संकल्प संस्थान, प्रयागराज की डॉ. अंजलि केसरी ने कहा कि वर्तमान समय में आपदाएं जिस प्रकार से बढ़ रही हैं, उनमें से अधिकांश मानवजनित हैं।

उन्होंने कहा कि हमें इन आपदाओं को रोकने और अपने भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए सस्टेनेबल डेवलपमेंट की बात करनी होगी। सस्टेनेबल डेवलपमेंट का उदाहरण हम इन छात्रों के साथ प्रकृति की संचयन की बात कर और प्रकृति, पर्यावरण, जल, जंगल और जमीन के संरक्षण के माध्यम से पेश कर सकते हैं।

डॉ. केसरी ने कहा कि प्रकृति का आभार हम लोग पूर्ण रूप से प्रकट नहीं कर सकते हैं, क्योंकि हमारे शरीर की रचना प्रकृति (पंच तत्व) से ही हुई है। लेकिन सच में प्रकृति का आभार हम लोग कम से कम संसाधनों का अनुकूल प्रयोग करके भी दे सकते हैं।

मंगल भूमि फाउंडेशन के अध्यक्ष रामबाबू तिवारी ने कहा कि प्रकृति नमन दिवस के माध्यम से लोगों को प्रकृति और पर्यावरण से जोड़ने का कार्य भी किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में पहाड़, छोटी नदियां, तालाब, पोखर और झील विलुप्त हो रहे हैं।

ऐसे में प्रकृति नमन दिवस के माध्यम से नेचर नेटवर्क के स्वयंसेवक जल के प्राकृतिक स्रोतों जैसे तालाब, पोखर, झील और छोटी नदियों को बचाने का कार्य करें और प्रकृति नमन दिवस का सफल उदाहरण प्रस्तुत करें।

नेचर नेटवर्क के माध्यम से देश भर में प्रकृति नमन दिवस मनाया जा रहा है और आगे आने वाले समय में इसे गांव-गांव, मोहल्ला, स्कूल और कॉलेज स्तर पर मनाया जाएगा। इसके लिए हमें वर्ष भर प्रयास करना होगा और अगले वर्ष के प्रकृति नमन दिवस के लिए अभी से तैयारी शुरू कर देनी होगी।

इसके लिए छोटी-छोटी बैठकें (ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यम), जागरूकता यात्रा, वॉल पेंटिंग, नुक्कड़ नाटक आदि के माध्यम से लोगों को नेचर नेटवर्क में जोड़कर प्रकृति नमन दिवस मना कर प्रकृति का आभार प्रकट करना होगा।

प्रकृति नमन दिवस के अवसर पर सेवा बस्ती के छात्र-छात्राओं को पर्यावरण संरक्षण हेतु शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से अंकित, मयंक, अर्पित, सुशील, गुड़िया, सीखा, नंदिनी, स्नेहा, दीक्षा आदि लोग उपस्थित थे।

MANGAL BHOOMI FOUNDATION
ABIDING BY NATURE

राजकीय मुकुंदलाल इंटर कॉलेज, महोबा में प्रकृति नमन दिवस मनाया गया।

राजकीय मुकुंदलाल इंटर कॉलेज, महोबा में प्रकृति नमन दिवस मनाया गया। मंगल भूमि फाउंडेशन, महोबा इकाई और राजकीय मुकुंद लाल इंटर कॉलेज, महोबा के संयुक्त तत्वाधान में बसंत पंचमी (14 फरवरी 2024) के अवसर पर वृक्षारोपण करके प्रकृति नमन दिवस मनाया गया।

राजकीय मुकुंदलाल इंटर कॉलेज, महोबा के प्राचार्य प्रेम अनुरागी जी ने कहा कि प्रथम प्रकृति नमन दिवस के अवसर पर प्रकृति को हरा-भरा करने और अपने कैंपस को इको-फ्रेंडली बनाने के उद्देश्य से कॉलेज परिसर में वृक्षारोपण किया गया है।

वृक्षारोपण के बाद जिन छात्रों ने वृक्षारोपण किया, उन्हें एक-एक वृक्ष गोद लेने के लिए प्रेरित किया गया। प्राचार्य जी ने कहा कि अगले वर्ष प्रकृति नमन दिवस (बसंत पंचमी) से पहले इन वृक्षों का मूल्यांकन किया जाएगा और जिस छात्र का वृक्ष अच्छा होगा, उसे सम्मानित किया जाएगा।
वृक्षारोपण में प्रमुख रूप से छात्र-छात्राएं अंकिता, सिद्धार्थ, सुमन, हेमलता, स्नेहा, पंकज, राहुल, अंशुमान आदि मौजूद रहे।

एपीजे अब्दुल कलाम मेमोरियल स्कूल, बदौसा, बांदा में मनाया गया प्रकृति नमन दिवस।

मंगल भूमि फाउंडेशन, बांदा इकाई द्वारा आयोजित प्रकृति नमन दिवस बसंत पंचमी (24 फरवरी 2024) को मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री अहसान अली ने विद्यालय के छात्र-छात्राओं को पर्यावरण प्रदूषण और बढ़ते तापमान के चलते जलवायु परिवर्तन से हो रहे नुकसान, जैसे कि प्राकृतिक आपदाएं (बाढ़ और सूखा) के बार-बार आने के बारे में अवगत कराया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर प्रधानाचार्या श्रीमती ज्योति तिवारी ने कहा कि बच्चे देश के भविष्य हैं और आगे आने वाले पर्यावरण प्रदूषण के संकट को नियंत्रित करने के लिए स्कूल के बच्चों को जागरूक करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में प्रकृति नमन दिवस प्रत्येक दिन मनाने की आवश्यकता है।

श्रीमती तिवारी ने कहा कि जिस प्रकार से वर्तमान समय में जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और मिट्टी प्रदूषण लगातार बढ़ रहा है, उस वजह से छात्रों का स्वास्थ्य खराब हो रहा है। हमें अपनी आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ रखने के लिए पर्यावरण को स्वस्थ रखना बहुत जरूरी हो गया है।

उन्होंने कहा कि हमें अपने आसपास हरियाली बढ़ानी होगी और पर्यावरण अनुकूल कार्य करने होंगे। अपने आसपास की हरियाली बढ़ाने के लिए स्कूल के समस्त छात्र-छात्राओं से अपील की गई कि वे अपने घरों में एक-एक पौधा रोपण जरूर करें।

प्रकृति नमन दिवस के अवसर पर स्कूल के समस्त छात्र-छात्राओं को शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम में अमित कुमार गुप्ता, राजेंद्र कुमार, हारून खान, गोविंद कुमार, अजय गुप्ता और अन्य शिक्षक समेत समस्त छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

स्वामी शांतानंद सरस्वती विद्या मंदिर, काकुन, महोबा में प्रकृति वंदन कार्यक्रम का हुआ आयोजन।

स्वामी शांतानंद सरस्वती विद्या मंदिर, काकुन, महोबा में प्रकृति वंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मंगल भूमि फाउंडेशन, महोबा इकाई और बुंदेलखंड सेवा भारती के संयुक्त तत्वाधान में प्रकृति वंदन दिवस कार्यक्रम बसंत पंचमी (14 फरवरी 2024) के अवसर पर आयोजित किया गया।

प्रकृति वंदन दिवस की शुरुआत सरस्वती पूजा से हुई, जिसमें स्वामी शांतानंद सरस्वती विद्या मंदिर के अध्यापक श्री कुलदीप मिश्र, श्री मयंक त्रिपाठी, श्री रामअवतार यादव और श्री शिव सिंह जी ने सरस्वती जी की प्रतिमा में पुष्प अर्पित कर पूजा की। इसके पश्चात स्वागत गीत और सरस्वती वंदना की गई।

वातावरण को शुद्ध करने और प्रकृति को संतुलित करने के उद्देश्य से कैंपस परिसर में आचार्य कुलदीप मिश्र जी ने छात्राओं के साथ हवन पूजन किया। प्रख्यात पर्यावरणविद् डॉ. अनिल प्रकाश जोशी जी की अगुवाई में मनाए जा रहे प्रथम प्रकृति वंदन दिवस के अवसर पर केंद्रीय कार्यालय देहरादून से विमोचित पोस्टर का विमोचन स्कूल के छात्र-छात्राओं ने किया।
श्री रामअवतार यादव ने कहा कि प्रकृति वंदन दिवस का आयोजन प्रकृति का धन्यवाद ज्ञापित करने के लिए किया गया है। उन्होंने कहा कि हम लोगों ने छोटे-छोटे पौधों की पूजा की और पौधों की पूजा करने के उपरांत विद्यालय परिसर में पौधा रोपण किया गया।

उन्होंने कहा कि हमारा देश आस्थावान है और वास्तविक रूप में ईश्वर प्रकृति में ही विराजमान है, इसलिए प्रकृति की पूजा करना प्रकृति का आभार प्रकट करना है। श्री शिव सिंह ने कहा कि बुंदेलखंड क्षेत्र में अत्यधिक वनों का कटाव, जल के प्राकृतिक स्रोतों पर अतिक्रमण, भौतिकवाद और शहरीकरण के चलते बुंदेलखंड क्षेत्र हमेशा अकाल और दुष्काल के लिए जाना जाता है।
उन्होंने कहा कि इस कलंक को मिटाने के लिए हमें प्रकृति के साथ जुड़ना होगा और प्रकृति से लोगों को जोड़ने के लिए गांव-गांव जाकर स्कूलों में बच्चों को जोड़ने का प्रयास करना होगा।
कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन मयंक त्रिपाठी ने किया। प्रकृति वंदन दिवस के अवसर पर स्वामी शांतानंद सरस्वती विद्या मंदिर के समस्त छात्राएं मौजूद रहीं।

MANGAL BHOOMI FOUNDATION
ABIDING BY NATURE

"संगम के नाविक - गंगा के रक्षक"

यह कार्यक्रम एक पर्यावरण-संवेदनशील और सामुदायिक भागीदारी पर आधारित पहल है, जिसे मंगल भूमि फाउंडेशन द्वारा संचालित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रयागराज के संगम क्षेत्र में गंगा नदी की स्वच्छता, संरक्षण और स्थानीय नाविक समुदाय की जागरूकता को बढ़ाना है।

कार्यक्रम की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. नाविकों की भूमिका: नाविकों को "गंगा रक्षक" के रूप में प्रशिक्षित किया गया है। उन्हें यह सिखाया गया है कि वे कैसे यात्रियों और तीर्थयात्रियों को नदी में कूड़ा न डालने के लिए प्रेरित करें। नाविक अब गंगा की स्वच्छता और संरक्षण के लिए अपने ग्राहकों को शिक्षित करते हैं।

2. प्रशिक्षण और जागरूकता: मंगल भूमि फाउंडेशन ने नाविकों के लिए विशेष वर्कशॉप और ट्रेनिंग कैंप का आयोजन किया है। गंगा की धार्मिक और पर्यावरणीय महत्ता को समझाया गया है। उन्हें कचरा प्रबंधन, प्लास्टिक उपयोग कम करने और जैविक विकल्पों के बारे में जानकारी दी गई है।

3. सामुदायिक भागीदारी: स्थानीय समाज, स्कूली बच्चों, स्वयंसेवकों और नगर निगम को भी इस पहल में जोड़ा गया है। संगम क्षेत्र में सफाई अभियान चलाए गए हैं। सामाजिक और धार्मिक संगठनों से सहयोग लिया गया है।

4. पर्यावरणीय पहल: संस्था ने सैकड़ों नाविकों को डस्टबिन वितरित किए हैं। नाविकों ने फिर नावों में कचरा एकत्र करने के लिए डस्टबिन लगाए हैं। प्लास्टिक मुक्त संगम के लिए पोस्टर, पेम्फलेट और नुक्कड़ नाटक के माध्यम से संदेश प्रसारित किए गए हैं।

5. उद्देश्य:
- गंगा को प्लास्टिक मुक्त बनाना।
- गंगा की जैवविविधता को संरक्षित करना।
- नाविकों के जीवनस्तर को सुधारना और उन्हें पर्यावरण संरक्षक के रूप में सशक्त बनाना।

नमामि गंगे
माघ मेला – 2024
OPPO F21s Pro 5G

Payments Bank
मीडिया टावर
Payments Bank
OPPO F21s Pro 5G

MANGAL BHOOMI FOUNDATION

Payments Bank
मीडिया टावर
Payments Bank
हर परिवार का एक इतिहास होना है।
OPPO F21s Pro 5G

MANGAL BHOOMI FOUNDATION
OPPO F21s Pro 5G

ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज में एकदिवसीय राष्ट्रीय नदी सम्मेलन 2024

राष्ट्रीय सेवा योजना ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज प्रयागराज, मंगल भूमि फाउंडेशन बांदा एवं जीआईजेड फाउंडेशन जर्मनी के संयुक्त तत्वावधान में 23 फरवरी 2024 को महाविद्यालय के मालवीय ऑडिटोरियम में "राष्ट्रीय नदी सम्मेलन-2024 (नदियों का मैट्रिक्स-समावेशी भारत: सतत माघ मेले का उत्सव 2024)" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस आयोजन में बतौर मुख्य अतिथि आईपीएस राजीव नारायण मिश्र, डीआईजी माघ मेला की गरिमामयी उपस्थिति रही।

ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज के यशस्वी प्राचार्य आदरणीय प्रोफेसर आनंद शंकर सिंह के दिशानिर्देश में आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन और स्वयंसेविका अमिता द्वारा प्रस्तुत 'सरस्वती वंदना' से हुआ। तत्पश्चात स्वयंसेविका पंखुड़ी द्वारा स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया गया। महाविद्यालय के एनएसएस प्रभारी डॉ अरविंद कुमार मिश्र ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत और विषय प्रवर्तन किया।

माघ मेला क्षेत्र में जल और जीवन के अध्येता और कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ धनंजय चोपड़ा ने अपने वक्तव्य से सभागार में उपस्थित श्रोतागण को जल बचाओ, जीवन बचाओ मुहिम से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि 1995 के बाद की पीढ़ी 'ज़ेड जेनरेशन' है और 2010 के बाद की पीढ़ी 'अल्फा पीढ़ी' है। इस कड़ी में उन्होंने बताया कि नदियाँ हमारी संस्कृति और परंपरा का हिस्सा हैं।

माघ मेला का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि विश्व की सारी संस्कृति यहाँ आकर कुलाचे भरती है। यह विश्व में एकमात्र ऐसी जगह है जहाँ चूल्हे और हवन का धुआँ एक साथ उठता है, राम और कृष्ण की कथा कही जाती है, और बिछड़े फिर अपनों से मिल जाते हैं। डॉ धनंजय चोपड़ा ने अपने अध्ययन का उल्लेख करते हुए बताया कि उनकी देखरेख में माघ मेले में 'ध्वनि संग्रह' किया गया है ताकि दृष्टिविहीन भी उस महनीय पल का अनुभव कर सकें।

कार्यक्रम की रिसोर्स पर्सन जीआईजेड फाउंडेशन जर्मनी और नमामि गंगे मिशन भारत सरकार से जुड़कर कार्य कर रही डॉ अंजना पंत ने बताया कि जर्मनी की डेन्यूब नदी 1970 के दशक में अति प्रदूषित हो चुकी थी, जिसके पास सांस लेना मुश्किल था। मछलियाँ और अन्य जलीय जंतु नष्ट होते जा रहे थे। उसको साफ होने में चालीस वर्ष लगे, पर अथक प्रयासों से आखिरकार वह स्वच्छ निर्मल धारा के रूप में पुनर्जीवित हो गई।

नदियों में गंदगी का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि कर्म जो नदियों में वर्जित है, उसमें एक यह भी है कि नहाने के बाद गंगा नदी में अपने कपड़े निचोड़ना नहीं चाहिए। साथ ही अंजना जी ने आगाह करते हुए बताया कि पुराणों में इस प्रकार के तेरह कृत्यों का निषेध किया गया है। क्लाइमेट चेंज का उल्लेख करते हुए उन्होंने युवाओं से भी नदियों की स्वच्छता में सक्रिय सहयोग का आह्वान किया।
कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि आईएफएस महावीर कौजल्गी ने तथ्यात्मक सूत्रों द्वारा हमें प्रदूषण से मुक्ति और उसकी कमी के गुर बताए। खत्म होते पानी के स्रोत को पुनर्जीवित करने के लिए निर्देशित किया कि प्रदूषण रोकना ही पानी के स्रोत को बचाना है। उन्होंने बताया कि सम्पूर्ण प्रयागराज में इक्यासी नाले चिह्नित किए गए हैं जिन्हें ट्रीटमेंट की जरूरत है। प्रदूषण कम करने के लिए उन्होंने ऑर्गेनिक खेती का सुझाव दिया। उन्होंने यह भी बताया कि प्रयागराज की ग्राम पंचायतों में तिरानबे 'वेस्ट ट्रीटमेंट योजना' कार्य कर रही है।

बतौर मुख्य अतिथि आईपीएस राजीव नारायण मिश्र डीआईजी ने माघ मेला की महत्ता और प्रशासन द्वारा उसकी व्यवस्था पर प्रकाश डाला। उन्होंने हिन्दू कैलेंडर का उल्लेख करते हुए पौष पूर्णिमा से माघी पूर्णिमा तक के समय को मास माघ कहा। कल्पवास के अर्थ और उसकी महत्ता के बारे में बताया कि जितना लाभ चार युगों में संचित पुण्य से होता है, उतना माघ मास में कल्पवास से ही अर्जित हो जाता है, ऐसी मान्यता है। मानव जीवन से जुड़े सभी आवश्यक कार्यों को धर्म से जोड़कर उसकी व्यापकता सर्वत्र कर दी गई। उन्होंने माघ मेला में पुलिस की कार्यशैली के बारे में बताकर लोगों को जागरूक किया।

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि सौरभ पहाड़ी रिसोर्स पर्सन जीआईजेड फाउंडेशन जर्मनी ने कई मुहिमों का उल्लेख किया जिनका अनुपालन कर वे जीवनदायिनी नदियों को पुनर्जीवित और पुनर्प्रतिष्ठित कर रहे हैं। उनकी मुहिम में रोको-टोको अभियान, गिव एंड टेक पॉलिसी और जीवन में एक विजन की पॉलिसी प्रमुख रही।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज के आदरणीय प्राचार्य डॉ मान सिंह ने प्रदूषण की भयावह स्थिति और उससे बचाव के गुर बताने के साथ-साथ एक कहानी के माध्यम से गंगा स्नान की महत्ता पर प्रकाश डाला। रिसोर्स पर्सन और वक्ताओं के द्वारा अंतः क्रियात्मक सत्र भी आयोजित किया गया। एनएसएस स्वयंसेवकों के नेतृत्व में एक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया, जिसका विषय था- "जल जीवन का अनमोल रतन, इसे बचाने का करो जतन"।

आयोजन के समापन पर मुख्य अतिथि द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले स्वयंसेवकों को मेडल प्रदान किया गया, जिसे प्राप्त कर उनके चेहरे खिल उठे। कार्यक्रम में धन्यवाद वक्तव्य मंगल भूमि फाउंडेशन के संयोजक रामबाबू तिवारी और संचालन डॉ मोनिशा सिंह ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी में डॉ रेफाक अहमद, डॉ गायत्री सिंह, डॉ कृष्णा सिंह, डॉ रुचि गुप्ता, डॉ आलोक कुमार मिश्र, डॉ शैलेश कुमार यादव और सभी इकाइयों के स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

MANGAL BHOOMI FOUNDATION
ABIDING BY NATURE

प्रशिक्षण कार्यक्रम

हर्बल गुलाल और कलर बनाने का सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (16 मार्च से 22 मार्च 2024 तक)

हेस्को, देहरादून के सहयोग से ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने और प्रकृति के अनुरूप होली का त्यौहार मनाने के उद्देश्य से बांदा जनपद के बबेरू ब्लॉक के अधांव गांव में मंगल ग्राम आश्रम में तीन दिवसीय हर्बल कलर/गुलाल बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में भभुआ, अधाँव, मर्का और पिंडारन की पचास से अधिक महिलाओं ने सहभागिता दर्ज की।

कलर बनाने की विधि:

हरे रंग के लिए पालक, नींबू, नीम, मेरिगोल्ड जैसे हरे पत्तों का उपयोग किया जा सकता है। सबसे पहले इन पत्तियों को मिक्सर में पीस लें, फिर पानी डालकर इसे छान लें। 1 किलो अरारूट पाउडर में 1/2 किलो पत्तियों का उपयोग करें। इसे अच्छी तरह मिलाकर धूप में सुखाएं। सर्दियों में धूप हल्की होती है, इसलिए 2-3 घंटे के लिए धूप में रखें और गर्मी के मौसम में 1 घंटे के लिए धूप में रखें।

लाल रंग के लिए चुकंदर, गुलाब के फूल, लाल गेंदा के फूल का उपयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार अन्य रंगों के लिए संबंधित फूल और पत्तियों का उपयोग करें। जब मिश्रण पूरी तरह सूख जाए, तो इसे मिक्सर में पीसकर छान लें। तैयार पाउडर ही आपका हर्बल गुलाल होगा।

भूमिका:

हर्बल गुलाल पारंपरिक रंगों का एक प्राकृतिक और सुरक्षित विकल्प है, जो खासतौर पर होली जैसे त्यौहारों के दौरान उपयोग किया जाता है। यह गुलाल रासायनिक रंगों के स्थान पर प्राकृतिक जड़ी-बूटियों, फूलों और पौधों से बनाया जाता है। यह न केवल रंगीन होता है, बल्कि शरीर के लिए भी लाभकारी होता है।

लाभ:

1. त्वचा और शरीर के लिए सुरक्षित: हर्बल गुलाल में रासायनिक तत्वों की कमी होती है, जो त्वचा पर जलन या एलर्जी का कारण बन सकते हैं।
2. प्राकृतिक तत्वों का उपयोग: हर्बल गुलाल में हल्दी, चंदन, गुलाब, केसर, नागकेसर और अन्य आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों का उपयोग होता है।
3. त्वचा को पोषण देना: हर्बल गुलाल त्वचा को पोषण और शांति प्रदान करता है।
4. एलर्जी और रैशेज से बचाव: हर्बल गुलाल में रासायनिक रंगों की तुलना में एलर्जी या रैशेज का जोखिम बहुत कम होता है।
5. पर्यावरण मित्र: हर्बल गुलाल बायोडिग्रेडेबल होता है, जिससे जल स्रोतों और प्राकृतिक आवासों पर इसका कोई प्रतिकूल असर नहीं पड़ता।
6. आध्यात्मिक और मानसिक लाभ: हर्बल गुलाल में उपयोग की जाने वाली जड़ी-बूटियाँ मानसिक शांति और ताजगी भी प्रदान करती हैं।

7-बालों के लिए भी लाभकारी:
हर्बल गुलाल बालों पर भी नकारात्मक प्रभाव नहीं डालता, बल्कि यह बालों को नुकसान से बचाता है और उनमें नमी बनाए रखता है। कुछ हर्बल गुलाल में बालों के लिए फायदेमंद तत्व जैसे आंवला या नीम भी होते हैं।
इस प्रकार, हर्बल गुलाल न केवल एक सुरक्षित और प्राकृतिक रंग होता है, बल्कि यह शरीर, मन और पर्यावरण के लिए भी लाभकारी है। होली के अवसर पर इसके उपयोग से हम रंगों के साथ-साथ स्वास्थ्य और सुरक्षा का भी ध्यान रख सकते हैं।

हर्बल गुलाल और रंग बनाने के लिए गेंदा, गुलाब के फूल, पालक और अन्य पत्तियों का उपयोग:

हर्बल गुलाल और रंग प्राकृतिक फूलों, पत्तियों और पौधों से बनाए जाते हैं। गेंदा, गुलाब, पालक और अन्य पत्तियां इन रंगों के लिए आदर्श सामग्री हैं, क्योंकि ये न केवल रंग देने में सक्षम होते हैं, बल्कि त्वचा और शरीर के लिए भी सुरक्षित रहते हैं।
आइए जानते हैं कि इनका उपयोग कैसे किया जाता है:

1. **गेंदा (Marigold) से हर्बल गुलाल:**
गेंदा का फूल एक बहुत अच्छा प्राकृतिक रंग प्रदान करता है, खासकर पीले और नारंगी रंग के लिए।
तैयारी: गेंदा के फूलों को सुखाकर उनका पाउडर तैयार किया जाता है।
लाभ: गेंदा में एंटीबैक्टीरियल और एंटीफंगल गुण होते हैं, जो त्वचा को संक्रमण से बचाते हैं। साथ ही यह त्वचा को निखारने में भी मदद करता है।
रंग: गेंदा का पाउडर सुनहरे और नारंगी रंग के गुलाल के रूप में इस्तेमाल होता है।

2. **गुलाब के फूल से हर्बल गुलाल**:
गुलाब का फूल न केवल अपनी खुशबू के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसके रंग से भी गुलाल तैयार किया जा सकता है।
तैयारी: गुलाब की पंखुड़ियों को सुखाकर उनका पाउडर बनाया जाता है। गुलाब की पंखुड़ियों को पानी में उबालकर भी रंग निकाला जा सकता है।
लाभ: गुलाब में एंटीऑक्सीडेंट और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो त्वचा को ठंडक और नमी प्रदान करते हैं।
रंग: गुलाब के फूल से लाल या गुलाबी रंग का गुलाल तैयार होता है, जो त्वचा के लिए सौम्य होता है।

3. **पालक और अन्य पत्तियों से हर्बल गुलाल:**
पालक और अन्य पत्तियां जैसे नीम, हल्दी और शहतूत से भी हर्बल रंग तैयार किए जा सकते हैं।
पालक (Spinach): पालक से हरा रंग प्राप्त होता है। इसे पत्तियों को सुखाकर और पीसकर हरे रंग के गुलाल के रूप में उपयोग किया जाता है।
नीम (Neem): नीम की पत्तियों से हरा रंग प्राप्त किया जा सकता है। नीम के पत्तों में एंटीबैक्टीरियल और एंटीफंगल गुण होते हैं, जो त्वचा को संक्रमण से बचाते हैं।
हल्दी (Turmeric): हल्दी से पीला रंग मिलता है और यह त्वचा के लिए फायदेमंद होता है, क्योंकि हल्दी में सूजन कम करने वाले और एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं।
शहतूत (Mulberry): शहतूत के पत्तों से बैंगनी रंग का गुलाल बनाया जाता है।

4. **अन्य पौधों से रंग**:
चंदन (Sandalwood): चंदन से हल्का सफेद या हल्का पीला रंग प्राप्त किया जा सकता है, जो त्वचा को ठंडक और शांति प्रदान करता है।
इंडिगो (Indigo): इंडिगो पौधे से नीला रंग तैयार किया जाता है।
बेसिल (Basil): तुलसी के पत्तों से हरा रंग तैयार किया जा सकता है।

महिलाओं को हर्बल गुलाल व रंग बनाना सिखाया

बांदा। हेस्को संस्थान देहरादून व मंगल भूमि फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में ग्राम पंचायत अंधाव में आयोजित प्रशिक्षण शिविर का सोमवार को समापन हुआ। इसमें महिलाओं को हर्बल रंग और गुलाल बनाने के तौर-तरीके बताए।

प्रशिक्षु अंकिता विश्वकर्मा ने कहा कि हर्बल रंग व अबीर तैयार करना बेहद आसान है। आरारोट के साथ जिस कलर का गुलाल बनाना है, उस रंग के फूल व पत्ती को मिलाकर सुखाना है और पेस्ट बना देना है। संरक्षक देवनाथ गर्ग ने प्रशिक्षक त्रिलोक, गीता, धीरज को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया। (संवाद)

रोशन सिंह बदन सिंह गायत्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कबरई ,महोबा में अध्ययन कर रहे छात्र-छात्राओं को हर्बल गुलाल/कलर बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।

हर्बल धूपबत्ती और अगरबत्ती बनाने का प्रसिक्षण कार्यक्रम:

भूमिका:

हर्बल धूपबत्तियाँ और अगरबत्तियाँ प्राचीन समय से भारतीय संस्कृति का हिस्सा रही हैं। इनका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों, योग, ध्यान और मानसिक शांति के लिए किया जाता है। अगरबत्तियाँ और धूपबत्तियाँ प्राकृतिक पदार्थों से बनाई जाती हैं, जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शांति का अनुभव कराती हैं। हर्बल अगरबत्तियाँ खासतौर पर प्राकृतिक जड़ी-बूटियों और तेलों से बनाई जाती हैं, जो न केवल वातावरण को महक देती हैं, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद होती हैं।

हर्बल धूपबत्ती और अगरबत्ती बनाने की विधि:

1. **सामग्री**:

- बांस की छड़ी (Bamboo Stick): बांस की पतली छड़ी पर धूपबत्ती बनाई जाती है।
- चूर्ण (Powder): हर्बल जड़ी-बूटियाँ (जैसे तुलसी, गुलाब, चंदन, नीम, क्यूप्रस, लैवेंडर) और सूखी फूलों का चूर्ण।
- सुगंधित तेल (Essential Oils): जैसे गुलाब, चंदन, लैवेंडर, नीम आदि।
- गोंद या बाइंडर (Binder): यह धूपबत्ती को एकजुट रखने के लिए उपयोगी होता है, जैसे मसाला या रेजिन।
- जड़ी-बूटियाँ (Herbs): हर्बल सामग्री जैसे तुलसी, गुलाब, चंदन, नीम, सैंधव नमक आदि।
- तरल (Liquid): पानी या गुलाब जल, जो मिश्रण को गाढ़ा करने के लिए उपयोग किया जाता है।

2. **बनाने की विधि:**

चरण 1: सबसे पहले बांस की छड़ी को लें और उसे अच्छे से साफ करें।

चरण 2: एक कटोरी में हर्बल चूर्ण (तुलसी, चंदन, गुलाब आदि) और बाइंडर सामग्री (जैसे रेजिन या मसाला पाउडर) को मिला लें।

चरण 3: आवश्यकतानुसार आवश्यक तेलों को मिश्रण में डालें (जैसे चंदन, गुलाब, नीम आदि) ताकि इसमें सुगंध आ सके।

चरण 4: मिश्रण में थोड़ा-सा पानी डालकर इसे गाढ़ा करें, जिससे यह एक पेस्ट की तरह बन जाए।

चरण 5: बांस की छड़ी को इस पेस्ट में डुबोकर अच्छे से कोट कर लें।

चरण 6: अब इन धूपबत्तियों को धूप में सुखाने के लिए रखें। यह प्रक्रिया आमतौर पर 1 से 2 दिन ले सकती है, जब तक कि धूपबत्तियाँ पूरी तरह से सूख न जाएं।

चरण 7: एक बार धूपबत्तियाँ सूख जाएं, तो उन्हें पैक करके सुरक्षित स्थान पर रख सकते हैं।

3. **अगरबत्ती बनाने की विधि:**

अगरबत्ती बनाने की विधि हर्बल धूपबत्ती बनाने के समान ही होती है, लेकिन अगरबत्ती में विभिन्न जड़ी-बूटियों और फूलों के मिश्रण का उपयोग किया जाता है। इसमें वाणिज्यिक बाइंडर की बजाय अधिक प्राकृतिक तत्वों का उपयोग किया जाता है।

हर्बल धूपबत्तियाँ और अगरबत्तियों के लाभ:

- मानसिक शांति: हर्बल धूपबत्तियाँ वातावरण को शांतिपूर्ण और सुखद बनाती हैं, जो मानसिक शांति को बढ़ाती हैं। यह ध्यान और योग के दौरान बहुत फायदेमंद होती हैं।
-
- स्वास्थ्य लाभ: हर्बल सामग्री जैसे तुलसी, चंदन और नीम में एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-फंगल गुण होते हैं, जो वायु को शुद्ध करते हैं और शरीर को रोगों से बचाते हैं।
-
- स्मरण शक्ति और एकाग्रता: हर्बल धूपबत्तियाँ और अगरबत्तियाँ मानसिक ध्यान केंद्रित करने और स्मरण शक्ति को बढ़ाने में मदद करती हैं।
-
- आध्यात्मिक लाभ: इनका उपयोग धार्मिक और आध्यात्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है। इससे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और शांति का अनुभव होता है।
-
- प्राकृतिक कीट नियंत्रण: कुछ हर्बल धूपबत्तियाँ, जैसे नीम की अगरबत्ती, घर के वातावरण से कीटों को दूर करने में मदद करती हैं।
-
- सुगंधित वातावरण: अगरबत्तियों और धूपबत्तियों से निकलने वाली प्राकृतिक सुगंध वातावरण को ताजगी प्रदान करती है और मन को प्रसन्न करती है।

हेस्को, देहरादून के सहयोग से ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने हेतु और प्रकृति के अनुरूप धार्मिक एवं आध्यात्मिक त्योहार मनाने हेतु बांदा जनपद के बबेरू ब्लॉक के अधांव गांव में मंगल ग्राम आश्रम में दो दिवसीय हर्बल अगरबत्ती/धूपबत्ती बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में भभुआ, अधाँव, मर्का, पिंडारन की पचास से अधिक महिलाओं ने सहभागिता दर्ज की।

हर्बल साबुन बनाने का प्रसिक्षण कार्यक्रम:
हेस्को,देहरादून के सहयोग से ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने हेतु व प्रकृति के अनुरूप धार्मिक एवं आध्यात्मिक त्यौहार मनाने हेतु बांदा जनपद के बबेरू ब्लाक के अधांव गांव में मंगल ग्राम आश्रम में एक दिवसीय हर्बल साबुन बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में भभुआ,अधाँव, मर्का, पिंडारन,की पचास से अधिक महिलाओं ने सहभागिता दर्ज की।

भूमिका:
हर्बल साबुन का उपयोग त्वचा की देखभाल के लिए किया जाता है। ये साबुन प्राकृतिक जड़ी-बूटियों, फूलों, तेलों और अन्य हर्बल उत्पादों से बनाए जाते हैं, जो त्वचा को पोषण देते हैं, उसे सुरक्षित रखते हैं और उसे नुकसान नहीं पहुँचाते। हर्बल साबुन बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम न केवल एक अच्छे व्यवसाय के अवसर को प्रदान करता है, बल्कि यह लोगों को एक स्वस्थ और प्राकृतिक त्वचा देखभाल विकल्प प्रदान करने में मदद करता है। इस कार्यक्रम में हर्बल साबुन बनाने की विधियों और सामग्री का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे लोग यह सीख सकते हैं कि वे अपनी त्वचा के प्रकार के अनुसार विभिन्न हर्बल साबुन बना सकते हैं।

हर्बल साबुन बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रमुख उद्देश्य:
प्राकृतिक उत्पादों के महत्व को समझाना: हर्बल साबुन के फायदे और प्राकृतिक अवयवों के स्वास्थ्य लाभों के बारे में जागरूकता फैलाना।
स्वस्थ त्वचा देखभाल: हर्बल साबुन की सहायता से त्वचा की देखभाल के प्राकृतिक और सुरक्षित तरीकों का प्रशिक्षण।
व्यवसायिक अवसर: हर्बल साबुन बनाने को एक व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए प्रशिक्षण देना।
सामग्री का सही चयन और उपयोग: हर्बल सामग्री का सही चयन और उसका मिश्रण करने की विधि सिखाना।

हर्बल साबुन बनाने की विधि:
सामग्री:

- साबुन बेस (Soap Base): ग्लीसरीन, शिया बटर, कैस्टिल साबुन बेस आदि।
- हर्बल तेल (Herbal Oils): जैतून का तेल, नारियल का तेल, बादाम का तेल, हेम्प सीड ऑयल आदि।
- हर्बल पाउडर (Herbal Powders): नीम पाउडर, हल्दी, तुलसी पाउडर, गुलाब पाउडर आदि।
- सुगंधित तेल (Essential Oils): लैवेंडर, चंदन, गुलाब, नींबू, और ट्रीटी ट्री तेल।
- नैतिक रंग (Natural Colorants): हल्दी, चुकंदर पाउडर, मिट्टी का रंग।
- पानी (Water): साबुन बनाने के लिए उचित मात्रा में पानी।

बनाने की विधि:

- साबुन बेस तैयार करें: सबसे पहले साबुन बेस को छोटे टुकड़ों में काट लें और उसे बर्तन में डालकर माइनिमल हीट पर पिघलने दें।
- हर्बल तेलों का मिश्रण: पिघलने के बाद, इसमें हर्बल तेल जैसे जैतून या नारियल तेल डालें और अच्छे से मिलाएं। यह त्वचा को नमी प्रदान करेगा।
- हर्बल पाउडर और आवश्यक तेल डालें: अब हर्बल पाउडर (जैसे हल्दी, नीम पाउडर) और आवश्यक तेल (लैवेंडर, चंदन) डालें। इनसे साबुन को सुगंध और औषधीय गुण मिलेंगे।
- रंग और आकार: यदि आप साबुन में रंग डालना चाहते हैं, तो प्राकृतिक रंग जैसे हल्दी या चुकंदर पाउडर का उपयोग करें। आप साबुन को अलग-अलग आकार में ढालने के लिए सांचे का उपयोग कर सकते हैं।
- ठंडा होने दें: मिश्रण को सांचे में डालकर उसे ठंडा होने के लिए छोड़ दें। लगभग 2-4 घंटे में साबुन पूरी तरह से सेट हो जाएगा।
- साबुन निकालें: जब साबुन ठंडा और ठोस हो जाए, तो उसे धीरे-धीरे सांचे से बाहर निकालें।
- साबुन का उपयोग: तैयार हर्बल साबुन को इस्तेमाल करने से पहले 24-48 घंटे तक अच्छे से सूखने के लिए रख दें।
-
- **हर्बल साबुन के लाभ:**
- त्वचा को पोषण देना: हर्बल साबुन में प्राकृतिक तेल होते हैं जो त्वचा को पोषण देते हैं और उसे नरम और मुलायम बनाते हैं। यह सूखी त्वचा को हाइड्रेट करता है।
- रासायनिक मुक्त: हर्बल साबुन में कोई भी कठोर रासायनिक तत्व नहीं होते, जिससे यह त्वचा के लिए सुरक्षित होते हैं। यह एलर्जी और त्वचा की जलन को कम करने में मदद करता है।
- प्राकृतिक उपचार: हर्बल साबुन त्वचा पर प्राकृतिक उपचार प्रदान करते हैं, जैसे कि नीम पाउडर और हल्दी के एंटी-बैक्टीरियल गुण त्वचा को साफ रखते हैं।
- पर्यावरण के लिए सुरक्षित: हर्बल साबुन पर्यावरण को हानि नहीं पहुँचाते हैं क्योंकि ये बायोडिग्रेडेबल होते हैं और इनमें कोई हानिकारक रासायनिक तत्व नहीं होते।
- समान त्वचा टोन: हर्बल साबुन त्वचा के रंग को समान बनाने और झाइयाँ कम करने में मदद करते हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम
ग्रामीण महिलाओं
को आर्थिक रूप से सशक्त करने हेतु
आयोजक-मंगल भूमि फाउंडेशन

प्रशिक्षण कार्यक्रम
ग्रामीण महिलाओं
को आर्थिक रूप से सशक्त करने हेतु

बुंदेली होली व फाग उत्सव:-

बुंदेलखंड के बांदा में गांव-गांव में गोबर के कंडे, ओपल और बरूला (बल्ला) बनाए जाते हैं। होली पर इन्हीं कंडों को जलाकर लोग परंपरागत रूप से होली का पर्व मनाते हैं। हर साल यहां पर सात दिनों तक होली का पर्व मनाया जाता है। होलिका दहन से लेकर बुढ़वा मंगल (आगामी मंगलवार) तक बुंदेलखंड के गांवों की चौपालों में फाग गायन, होली मिलन समारोह से लेकर अन्य कार्यक्रम होते हैं। इस दौरान भाई-दूज का पर्व और पंचमी महोत्सव, बुढ़वा मंगल भी मनाया जाता है।

बुंदेलखंड की होली लोगों को पर्यावरण संरक्षण और लोक संस्कृति के संरक्षण का संदेश देती है। लेकिन वर्तमान समय में हमारी लोक संस्कृति और परंपरा विलुप्त हो रही है। इस परंपरा को पुनः बहाल करने हेतु मंगल भूमि फाउंडेशन के बैनर तले गांव-गांव फाग उत्सव का आयोजन कराया जाता है।

बुंदेलखंड इलाके में फागुन के महीने में गांव की चौपालों में फाग की अनोखी महफिलें जमती हैं, जिनमें रंगों की बौछार के बीच अबीर-गुलाल से सने चेहरों वाले फगुआरों के होली गीत (फाग) जब फिजा में गूंजते हैं, तो ऐसा लगता है कि श्रृंगार रस की बारिश हो रही है। फाग के बोल सुनकर बच्चे, जवान और बूढ़ों के साथ महिलाएं भी झूम उठती हैं। छोटे बच्चे नगाड़ा बजाकर फाग शुरू होने का ऐलान करते दिखाई देते हैं, तो वहीं महिलाएं भी इस मस्ती से पीछे नहीं रहती हैं। वे भी एक-दूसरे को रंग-अबीर लगाती हुई फाग के विरह गीत गाकर माहौल को और भी रोमांचक बना देती हैं।

वर्तमान समय में बहुत से गांवों में यह परंपरागत उत्सव (फाग उत्सव) नहीं होने लगे हैं। ऐसे में बुंदेली परंपरा और संस्कृति को बनाए रखने हेतु होली गीत (फाग) गाकर होली त्योहार मनाने हेतु लोगों को प्रेरित किया जा रहा है और छोटी-छोटी टोली में मोहल्ले स्तर पर फाग उत्सव मनाया जा रहा है।

बुंदेलखंड क्षेत्र में सुबह हो या शाम, गांव की चौपालों पर सजने वाली फाग की महफिलों में केमिकल वाले रंगों की जगह टेसू के फूलों या महावरी रंगों का इस्तेमाल हमेशा से होता रहा है। लेकिन आधुनिकता, भौतिकतावादी समाज के चलते यह परंपरा खत्म सी हो गई है। इस परंपरा को पुनः बहाल करने हेतु,बुंदेलखंड क्षेत्र में फाग उत्सव का आयोजन होली गीत (फाग) सूखी होली (हर्बल गुलाल) के माध्यम से खेलने हेतु बढ़ावा दिया जा रहा है । क्योंकि बुंदेलखंड क्षेत्र हमेशा से पानी के संकट से सामना किया है। ऐसे में रंग (कलर) के माध्यम से होली खेलने में रंग को छुड़ाने में लाखों लीटर पानी बर्बाद हो जाता है। इस वजह से फाग उत्सव के दौरान सूखी होली खेलने हेतु बढ़ावा दिया जा रहा है। होली का त्यौहार, फाग उत्सव से पहले गांव-गांव हर्बल गुलाल बनाने की प्रशिक्षण भी दिया गया है।

जल मित्र

जल मित्र
संगम के नाविक गंगा के रक्षक

जल मित्र
संगम के नाविक गंगा के रक्षक

जल मित्र
संगम के नाविक गंगा के रक्षक

अंधाव गांव में फाग उत्सव की हुई शुरुआत

बांद।(प्रचंड शक्ति न्यूज)। स्थानीय संस्कृति परंपरागत त्योहार फाग का उत्सव धीरे–धीरे विलुप्त हो रहा है।इस संस्कृति को बचाए रखने एवं होली में जल की बर्बादी न हो इसलिए सूखी होली (हर्बल गुलाल)से होली मनाने हेतु गांव में लोगो को प्रेरित किया जा रहा है।मंगल आश्रम में आज से बुढ़वा मंगल तक फाग उत्सव में कलाकार भक्तिपूर्ण होली गीत गायेंगे, नृत्य और नाटक करेंगे यह पूरा भव्य आयोजन भगवान कृष्ण और राधा रानी के लिए समर्पित रहेगा।जल मित्र देवगुलाम यादव ने कहा कि गांव में जो पुराने लोग बचे है थोड़ा त्योहार होली के दिन फाग का उत्सव कर लेते है लेकिन नई पीढ़ी के लोगो खास तौर में युवाओं में ऐसे आयोजन से परंपरा से भाग रहे है। मंगल भूमि फाउंडेशन इकाई के अध्यक्ष राजा भैया ने कहा कि वैश्वीकरण के चलते हमारे जी स्थानीय परंपराएं और संस्कृति में कुठाराघात हुआ है।हमें अपने त्योहार और उत्सव को अपने तरीके से मनाना होगा सामाजिक समरसता का यह त्यौहार आज हुडदंगी तक सीमित हो गया है। इसलिए गांव में पुरानी परंपरा को बहाल करने की शुरुवात की गई है।इसमें युवकों भी जोड़ने का प्रयास किया जायेगा।

अधावं गांव में फाग उत्सव मनाते ग्रामीण • ग्रामीण

फाग उत्सव में उड़ा रंग और गुलाल, गीतों पर झूमे लोग

जागरण संवाददाता, बांदा: मंगलवार से अंधाव गांव में फाग उत्सव की शुरूआत हो गई। पहले दिन सूखी होली खेलने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया गया। इसके साथ ही फाग गीतों पर ग्रामीण झूमते रहे।

होली पर होने वाले फाग का उत्सव धीरे-धीरे विलुप्त हो रहा है। इस संस्कृति को बचाए रखने एवं होली में जल की बर्बादी न हो इसलिए सूखी होली (हर्बल गुलाल) से खेलने के लिए ग्रामीणों को प्रेरित किया गया। मंगल आश्रम में आज से बुढ़वा मंगल तक फाग उत्सव में कलाकार भक्तिपूर्ण होली गीत गाएंगे। इसके साथ ही नृत्य और नाटक करेंगे। यह पूरा आयोजन भगवान कृष्ण और राधा रानी को समर्पित रहेगा। जल मित्र देवगुलाम यादव ने कहा कि गांव में जो पुराने लोग ब है। वह होली के दिन फाग का उत्स कर लेते है लेकिन नई पीढ़ी के लो खास तौर में युवाओं में ऐसे आयोज से परंपरा से भाग रहे है। मंगल भू फाउंडेशन इकाई के अध्यक्ष राज भैया ने कहा कि वैश्वीकरण के चल स्थानीय परंपराएं और संस्कृति प कुठाराघात हुआ है। हमें त्योहार औ उत्सव को अपने तरीके से मनान होगा। सामाजिक समरसता का य त्योहार आज हुड़दंगी तक सीमित र गया है। इसलिए गांव में पुरानी परंप को बहाल करने की शुरूआत की ग है। इसमें युवकों भी जोड़ने का प्रयास किया जाएगा। यहां दुर्गा विश्वकर्मा मनीष तिवारी, प्रेम, कालका, शिव गोपाल, नंदकिशोर, प्रांशु, राजन, ब्रजकिशोर, राम नरेश आदि लोग रहे।

अधांव में शुरू हुआ फाग उत्सव, सप्ताह भर रहेगी धूम

सूखे व हर्बल गुलाल की होली खेलने की दी जा रही प्रेरणा

संवाद न्यूज एजेंसी

https://www.livehindustan.com/uttar-pradesh/banda/story-phag-festival-begins-in-banda-will-continue-till-budhwa-mangal-9575767.html

बांदा। बबेरू के अंधाव गांव में मंगलवार से फाग उत्सव की शुरुआत की गई। ग्रामीणों को हर्बल व सूखी होली के लिए जागरूक किया जा रहा है।

स्थानीय संस्कृति परंपरागत त्योहार फाग का उत्सव धीरे-धीरे विलुप्त हो रहा है। इस संस्कृति को बचाए रखने एवं होली में जल की बर्बादी न हो, इसके लिए सूखी (हर्बल गुलाल) होली मनाने के लिए गांव में लोगो को प्रेरित किया जा रहा है।

मंगल आश्रम में बुढ़वा मंगल तक फाग उत्सव होगा। कलाकार भक्तिपूर्ण होली गीत गाएंगे। नृत्य और नाटक प्रस्तुत करेंगे। जल मित्र देवगुलाम यादव ने बताया कि गांव में जो बुजुर्ग हैं, वह होली के दिन फाग का उत्सव करते है, लेकिन नई पीढ़ी के युवा ऐसे आयोजन व परंपरा से भाग रहे हैं।

अधांव गांव में फाग उत्सव पर होली गीत गाते ग्रामीण। संवाद

मंगल भूमि फाउंडेशन इकाई अध्यक्ष राजा भैया ने कहा कि वैश्वीकरण के चलते हमारे जी स्थानीय परंपराएं और संस्कृति में कुठाराघात हुआ है।

हमें अपने त्योहार और उत्सव को अपने तरीके से मनाना होगा। सामाजिक समरसता का यह त्योहार आज हुडदंगई तक सीमित हो गया है।

हमारे सहयोगी संस्थान

MANGAL BHOOMI FOUNDATION

ABIDING BY NATURE